Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380,
https://www.srjis.com/issues_data/224
Peer Reviewed, Refereed & Indexed Journal, Nov-Dec, 2023, Vol- 12/80
https://doi.org/10.5281/zenodo.10539247

भारत में लैंगिक असमानता का समीक्षात्मक अध्ययन

तबस्सुम

शोध छात्र (समाज शास्त्र), समाजशास्त्र विभाग, शिया कॉलेज, लखनऊ विश्वविद्यालय

Paper Received On: 25 Dec 2023
Peer Reviewed On: 28 Dec 2023
Published On: 01 Jan 2024

सारांश

भारत एक विकासशील देश है. भारत के विकास के लिए तीव्र आर्थिक विकास आवश्यक है। यह तभी संभव है जब भारत के विकास में पुरुषों और महिलाओं की समान भागीदारी हो। महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण समावेशी आर्थिक विकास के केंद्र में है। 21वीं सदी में भी भारत में बेटे के लिए जश्न और बेटी के लिए मातम मनाया जाता है। महिलाओं के प्रति हीन भावना रखना शर्म की बात है। लिंगानुपात में व्यापक लैंगिक साक्षरता अंतर और व्यापक असमानता है। भारत के उन हिस्सों में जहां लिंग साक्षरता अंतर अधिक है गरीबी भी अधिक है। भारत में लैंगिक असमानता के लिए सरकारी तंत्र के साथ-साथ हमारा समाज भी बराबर का भागीदार है। विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की कम भागीदारी और महिलाओं के प्रति भेदभाव आम बात हो गई है। शिक्षा लैंगिक असमानता और गरीबी के बीच घनिष्ठ संबंध है। इसलिए लैंगिक भेदभाव दूर किए बिना विकसित भारत का सपना साकार नहीं होगा। इसलिए इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विकासशील भारत में लैंगिक भागीदारी के महत्व और इसकी बाधाओं पर ध्यान आकर्षित करना है।

कुंजी :– साक्षरता, लैंगिक अनुपात, आरक्षण, दहेज प्रथा, निर्धनता

प्रस्तावनारू विकास विमर्श और लैंगिक संबंधों के बीच संबंध बहुआयामी है और लौकिक तथा सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों के लिए विशिष्ट है। किसी विशेष सामाजिक परिवेश में कुछ मान्यताओं और मान्यताओं के आधार पर लिंग परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण करना भी महत्वपूर्ण है। करी और वर्नाय के अनुसारए ष्लिंग" शब्द को अक्सर "सामाजिक असमानता के विश्लेषण और हस्तक्षेप के संभावित बिंदुओं

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

की पहचान करने के लिए एक प्रवेश बिंदु" के रूप में पहचाना जाता है। लिंग किसी विशेष समाज में घरेलू और सामुदायिक दोनों क्षेत्रों में महिलाओं और पुरुषों को सौंपी गई गतिविधियों और भूमिकाओं से नियंत्रित होता है। पुरुष और महिला दोनों अपने विभिन्न कार्यों के माध्यम से लिंग भूमिकाओं और लिंग मानदंडों को चित्रित करते हैं और उन्हें परंपरा और पसंद के अनुसार मिश्रित करते हैं। "लिंग भूमिकाएँ - व्यवहार और प्रथाएँ जो महिलाओं और पुरुषों को अलग-अलग सौंपी जाती हैं - सामाजिक रूप से निर्मित होती हैं (अर्थातए वे जैविक रूप से निर्धारित नहीं होती हैं बल्कि सामाजिक प्रथाओं और प्रवचनों के माध्यम से निर्मित होती हैं)।" . यौन संबंधों में न केवल दो विपरीत लिंगों के बीच विपरीत और द्विदिश संबंध शामिल होते हैं बल्कि स्वयं समान लिंगों के बीच भी इसे दोहराया जा सकता है। लिंग पहचान "लिंग भूमिका से अलग है क्योंकि यह सक्रिय रूप से व्यक्त नहीं की जाती है" और मूल रूप से "वास्तविक दुनिया में एक पुरुष या महिला द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका" है। लिंग संबंध पर्यावरण-विशिष्ट होते हैं और उनके स्रोत डोमेन की विशिष्ट संरचना के अनुसार भिन्न होते हैं।

लैंगिक अध्ययन समाज के भीतर लैंगिक मानदंडों के अभ्यास और लैंगिक अध्ययन की सैद्धांतिक प्रक्रिया दोनों पर नया दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। क्रैनी–फ्रांसिस एट अल।, (2003) ने लिंग को रोजमर्रा की जिंदगी के एक पहलू के रूप में निरूपित करने का प्रयास किया। उन्होंने ''बात करने के तरीके'', ''सोचने के तरीके'', ''पढ़ने के तरीके'', ''देखने के तरीके'', ''होने के तरीके'' और ''जीने के तरीके'' जैसे लिंग से संबंधित विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने लिंग प्रणाली और प्रथाओं का पुनर्विश्लेषण करने के लिए निश्चित साधनों की खोज की। पुरुषत्व और स्त्रीत्व के संदर्भ में लिंगों की पदानुक्रमित भूमिकाओं का विश्लेषण किया जाता है। वे ''समान लेकिन विपरीत'' जैसे लिंगों के बीच विभिन्न संबंध भी बनाते हैंय विपरीत लेकिन महिला–नकारात्मकय विपरीत लेकिन महिला–सकारात्मकय और इसी तरह''। उन्होंने टिप्पणी की कि ''मानव लिंग द्विआधारी है, दो हिस्सों से बना है, जो एक दूसरे को परिभाषित करते हैं''। ''स्त्रीत्व और पुरुषत्व की द्विआधारी समझ'' लिंग धारणा को आकार देती है। उन्होंने ''पितृसत्ता'' और ''व्यक्तिपरकता'' जैसे ''लिंग प्रथाओं'' के रूपों के बीच एक संबंध दिखाया। उन्होंने लिंग और समाज के बीच संचार के तरीकों को भी प्रतिच्छेद किया। लिंग संबंधित सिद्धांतों के एक महत्वपूर्ण विश्लेषण से पता चला कि नारीवादी विचारधाराओं के साथ इसका घनिष्ठ संबंध है। ''स्टीरियोटाइपिंग'' की ''महत्वपूर्ण धारणा'' को भी लिंग प्रणाली के एक महत्वपूर्ण रूप के रूप में मान्यता प्राप्त है। मेयर (2002) ने संस्कृतियों और परंपराओं के क्षेत्र में ''लिंग पहचान और महिलाओं की एजेंसी'' पर ध्यान

केंद्रित किया। पितृसत्ता के एक कंटेनर में ''लिंग रूढ़िवादिता का कूटलेखन'' कैसे महिला पहचान को वंचित करता है, यह भी रेखांकित किया गया है। मेयर्स के लिए यह है

लैंगिक असमानता से तात्पर्य

- लैंगिक असमानता का तात्पर्य लैंगिक आधार पर महिलाओं के साथ भेदभाव से है। परंपरागत रूप से समाज में महिलाओं को कमजोर वर्ग के रूप में देखा जाता रहा है।
- वे घर और समाज दोनों जगहों पर शोषण, अपमान और भेद–भाव से पीड़ित होती हैं। महिलाओं के खिलाफ भेदभाव दुनिया में हर जगह प्रचलित है।
- वैश्विक लैंगिक अंतराल सूचकांक– 2020 में भारत 153 देशों में 112वें स्थान पर रहा। इससे साफ तौर पर अंदाजा लगाया जा सकता है कि हमारे देश में लैगिंक भेदभाव की जड़ें कितनी मजबूत और गहरी है।

लैंगिक असमानता के विभिन्न क्षेत्र

- सामाजिक क्षेत्र में– भारतीय समाज में प्रायः महिलाओं को घरेलू कार्य के ही अनुकूल माना गया है। घर में महिलाओं का मुख्य कार्य भोजन की व्यवस्था करना और बच्चों के लालन–पालन तक ही सीमित है। अक्सर ऐसा देखा गया है कि घर में लिये जाने वाले निर्णयों में भी महिलाओं की कोई भूमिका नहीं रहती है। महिलाओं के मुद्दों से संबंधित विभिन्न सामाजिक संगठनों में भी महिलाओं की न्यूनतम संख्या लैंगिक असमानता के विकराल रूप को व्यक्त करती है।
- आर्थिक क्षेत्र में– आर्थिक क्षेत्र में कार्यरत महिला और पुरुष के पारिश्रमिक में अंतर है। औद्योगिक क्षेत्र में प्रायः महिलाओं को पुरुषों के सापेक्ष कम वेतन दिया जाता है। इतना ही नहीं रोजगार के अवसरों में भी पुरुषों को ही प्राथमिकता दी जाती है।
- राजनीतिक क्षेत्र में– सभी राजनीतिक दल लोकतांत्रिक होते हुए समानता का दावा करते हैं परंतु वे न तो चुनाव में महिलाओं को प्रत्याशी के रूप में टिकट देते हैं और न ही दल के प्रमुख पदों पर उनकी नियुक्ति करते हैं।
- विज्ञान के क्षेत्र में– जब हम वैज्ञानिक समुदाय पर ध्यान देते हैं तो यह पाते हैं कि प्रगतिशीलता की विचारधारा पर आधारित इस समुदाय में भी स्पष्ट रूप से लैंगिक असमानता विद्यमान है। वैज्ञानिक समुदाय में या तो महिलाओं का प्रवेश ही मुश्किल से

होता है या उन्हें कम महत्त्व के प्रोजेक्ट में लगा दिया जाता है। यह विडंबना ही है कि हम मिसाइल मैन के नाम से प्रसिद्ध स्वर्गीय ए. पी.जे अब्दुल कलाम से तो परिचित हैं लेकिन मिसाइल वुमेन ऑफ इंडिया टेसी थॉमस के नाम से परिचित नहीं हैं।

- मनोरंजन क्षेत्र में– मनोरंजन के क्षेत्र में अभिनेत्रियों को भी इस भेदभाव का शिकार होना पड़ता है। अक्सर फिल्मों में अभिनेत्रियों को मुख्य किरदार नहीं समझा जाता और उन्हें पारिश्रमिक भी अभिनेताओं की तुलना में कम मिलता है।
- शेल क्षेत्र में– खेलों में मिलने वाली पुरस्कार राशि पुरुष खिलाड़ियों की बजाय महिला खिलाड़ियों को कम मिलती हैं। चाहे कुश्ती हो या क्रिकेट हर खेल में भेदभाव हो रहा है। इसके साथ ही, पुरुषों के खेलों का प्रसारण भी महिलाओं के खेलों से ज्यादा है।

यौन, लिंग विषयक भूमिकाएँ और लिंग विषयक समानतारू यौन शब्द से जीवविज्ञानीय चिन्ह संदर्भित होते हैं जो कि एक महिला को पुरुष से अलग करता है। अत्यधिक बुनियादी स्तर पर यह पुरुष और महिला के गुणसूत्रों की बनावट के बारे में बताता है। पुरुषों में एक्स वाई गुणसूत्रों का विन्यास है, जबकि महिलाओं में एक्स एक्स गुणसूत्रों का विन्यास है। इस आनुवंशिक भेद से प्रजनन अंगों, हार्मोन के अंतर और समग्र शारीरिक गठन में अंतर आता है। इस प्रकार 'यौन' शब्द मोटे तौर पर वह शरीरक्रिया विज्ञान संबंधी मापदंड बताता है जो मानव प्रजाति का 'स्त्री' और 'पुरुष' में विभेद करता है। ये शरीर.क्रिया विज्ञान संबंधित पैरामीटर विभिन्न व्यवहार पैटर्न और विचार प्रक्रियाओं को कैसे प्रभावित करते हैं यहां लिंग की अवधारणा महत्वपूर्ण हो जाती है। लिंग से तात्पर्य उस तरीके से है जिससे किसी पुरुष या महिला की सामाजिक और सांस्कृतिक अपेक्षाएँ निर्मित होती हैं। यह स्त्री या पुरुष होने से जुड़ी विशेषताओं और अवसरों का तथा महिलाओं और पुरुषों के बीच सामाजिक अन्तक्रिया और संबंधों का भेद है। यह इस बात का निर्धारण करता है कि प्रदत्त संदर्भ में महिला अथवा पुरुष से क्या अपेक्षित है, उन्हें क्या स्वीकृत है और उनके लिए कौन से मूल्य हैं। इस प्रकार लिंग (जेंडर) से अनन्य रूप से महिलाओं का ही हवाला नहीं मिलता है। जैसा कि पहले कहा गया है इसका संदर्भ स्त्री या पुरुष विशेष में आरोपित सामाजिक और सांस्कृतिक अर्थों से है। इसलिए लिंग (जेंडर) संबंधी पहचान बाह्य शक्तियों के सापेक्ष है। लिंग (जेंडर) समाज में महिलाओं और पुरुषों को परिभाषित करता है तथा जीवन में वे जो भूमिकाएं निभाते हैं उसे प्रभावित करता है। लोगों की अनिवार्य रूप से समान लिंग विषयक (जेंडर) पहचान नहीं

होती है। लिंग (जेंडर) रचना सिर्फ महिलाओं और पुरुषों के बीच अपितु महिलाओं और अन्य महिलाओं के बीच भी, उनकी लैंगिकता प्रजाति, जाति, वर्ग इत्यादि के आधार पर भेद को स्वीकार करता है।

लिंग (जेंडर) रूपरेखाओं का एक वर्ग प्रदान करता है जिसके अंदर स्त्री.पुरुष के बीच भेद का सामाजिक और वैचारिक निर्माण तथा निरूपण होता है। (मेसफील्ड 1994)। इस प्रकार यह विश्लेषण हेतु संकल्पनात्मक साधन है और इसका प्रयोग महिलाओं तथा पुरुषों के बीच असमानता के विभिन्न संरचनात्मक संबंधों जैसा कि श्रम बाजार, राजनीतिक ढांचे और गृहस्थी में प्रकट है, पर प्रकाश डालने के लिए किया गया है। लिंग (जेंडर) विषयक समानता का अभिप्राय महिलाओं और पुरुषों, लड़कियों और लड़कों के लिए समान अवसर, अधिकार और उत्तरदायित्व से है। समानता का अभिप्राय यह नहीं है कि महिलाएं और पुरुष समान हैं अपितु महिलाओं और पुरुषों के अवसर, अधिकार तथा उत्तरदायित्व उनके स्त्री या पुरुष में जन्म पर निर्भर नहीं है तथा निर्भर नहीं करेंगे।

लिंग (जेंडर) विषयक असमानता अधिकतर समाजों में विद्यमान है, इसका अभिप्राय यह है कि महिलाओं और पुरुषों को सौंपी गई भूमिकाओं तथ उत्तरदायित्वों , उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यकलापों तथा संसाधनों की उपलब्धता और उन पर नियंत्रण तथा निर्णय लेने के अवसरों में भेद और असमानता हैं। प्रत्येक समाज में लिंग (जेंडर) विषयक विभेद और लिंग (जेंडर) विषयक असमानता के परिमाण में अंतर है और यह उस समाज विशेष में विनिर्दिष्ट लिंग (जेंडर) विषयक भूमिका की प्रकृति पर निर्भर करता है।

विभिन्न समाजों में लैंगिक भूमिकाओं और लैंगिक अपेक्षाओं की प्रकृति अलग-अलग होती है क्योंकि वे सामाजिक रूप से निर्मित होती हैं। वास्तव मेंए लैंगिक भूमिकाएँ बहुआयामी हैं। लिंग भूमिकाएँ (पद्ध पुरुषों और महिलाओं की विशिष्ट व्यक्तित्व विशेषताओं को निर्दिष्ट करती हैं (पपपद्ध इस शर्त पर कि किसी विशेष सामाजिक व्यवस्था की संतुष्टि के लिए कुछ कार्य आवश्यक हैं। विशेष शब्द विभिन्न गतिविधियोंए क्षेत्रों या कार्यों को संदर्भित करते हैं (पपपद्ध जिन्हें संस्कृतियों और समाजों द्वारा अलग-अलग महत्व दिया जाता है जिसमें महिलाओं को अधीनस्थ पद सौंपा जाता है। इस सन्दर्भ में फ़्रांसीसी नारीवादी साइमन डी ब्यूवोइर का कथन कि महिलाएँ पैदा नहीं होतींय उन्हें महिला बना दिया जाता हैए यह बहुत उपयुक्त हो जाता है। इसका मतलब यह है कि एक व्यक्ति विशेष रूप से निर्मित मर्दाना या स्त्री छवि में कैद है। लिंग निर्माण स्त्री या पुरुष छवि के सामाजिक निर्माण की प्रक्रिया है। हालाँकिए

लिंग पहचान की सामाजिक संरचना परिवर्तनशील हैए जैसे स्वयंए शरीरए प्रकृति के साथ मानवीय संबंध और विशेष ऐतिहासिक क्षणों में दुनिया से संबंधित और समझने के तरीके। सप्ताह हैं. हमारी पहचान और उससे जुड़ी अवधारणाएँ तरल हैं। इसलिएए उदाहरण के लिएए राजनीतिक लामबंदी के माध्यम से लिंग पहचान का उल्लंघन किया जा सकता है। आइए अब हम सामाजिक निर्माण की अवधारणा को समझें। जैसा कि पहले कहा गया हैए विभिन्न सामाजिक एजेंसियां समाज में सामाजिक रूप से निर्मित असमान लिंग भूमिकाओं को कायम रखने में सक्रिय भूमिका निभाती हैं।

निष्कर्ष: लैंगिक असमानता समाज की अंतर्निहित संरचना के भीतर गहराई से निहित है। लैंगिक असमानता का स्तर सामाजिक व्यवहार पर निर्भर करता है जो सामाजिक समूहों में भिन्न होता है। इसलिए लैंगिक असमानता के विभिन्न रूपों और परिमाण की व्यापक समझ एक जटिल मुद्दा है। इस मुद्दे के समाधान के लिए नदिया जिले के चकदह और हरिनघाटा सीडी ब्लॉक के ग्रामीण क्षेत्रों का लैंगिक असमानता के दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया। 1991 से 2011 की अवधि के लिए लैंगिक असमानता के इस अध्ययन से निम्नलिखित महत्वपूर्ण अवलोकन सामने आए हैं। ग्राम स्तर पर लिंगानुपात अत्यधिक असमान है। अध्ययन क्षेत्र में बाल लिंगानुपात में भी भारी गिरावट देखी गई लेकिन साक्षरता में लैंगिक असमानता अभी भी अधिक है। कार्य भागीदारी दर के मामले में लैंगिक असमानता बहुत प्रमुख रही है। गांववार पुरुष कार्य भागीदारी दर काफी हद तक महिला कार्य भागीदारी दर से अधिक है। मुस्लिम आबादी में महिला कार्य भागीदारी दर उल्लेखनीय रूप से कम है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हरदयाल मुंशी (2010): रिपोर्ट मर्दुमशुमारी राज मारवाड़ी जोधपुर मान सिंह पुस्तक प्रकाशन अनुसंधान केंद्र
2. त्रिपाठीलक्ष्मीनारायण (2015): मैं हिजड़ा मैं लक्ष्मी भारत ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी।
3. ओकले अन्न (1917) : सेक्स जेण्डर एण्ड सोसायटी
4. ओकले अन्य (1974) : हाउस वाइफ एलेन, लेन लंदन पृसं. 68
5. गिडिंग्स एन्थोनी (2001) : सोशियोलॉजी, लंदन पालिटी प्रेस
6. फज़ल खाँ चौधरी बनाम राज्य ए.आई.आर. 1983 एस.सी. 323

7. नान फाउन्डेशन बनाम सरकार राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली 2010 क्रि.एल.जे. 94 (दिल्ली)

8. ई.पी.रोयप्पा बनाम तमिलनाडु राज्य ए.आई.आर. 1974 एस.सी. 597

9. मेनका गाँधी बनाम भारत संघ ए.आई.आर. 1978 एस.सी. 507

10. डी.एस. नकारा बनाम भारत संघ ए.आई.आर. 1983 एस.सी. 130 12. फ्रेन्सीस कोरेली बनाम भारत संघ ए.आई.आर. 1981, एस.सी. 746 13. राजस्थान पत्रिका : 21 जुलाई 2020 पृष्ठ संख्या 5

Cite Your Article as:
TABASUM. (2024). BHARAT MAIN LAIYNGIK ASAMANTA KA SAMISHATMAK ADDHYAN. Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies, 12(80), 164–170. https://doi.org/10.5281/zenodo.10539247